दिनांक 3 फरवरी, 1987

सं० श्रो० वि०/एफडी/2-87/4851--चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० नानक डेरी काट होडल, फरीदाबाद के श्रमिक श्री विजय पाल मार्फत अन्तराष्ट्रीयवादी मजदूर यूनियन, जी-162, इन्दरा नगर, सैवटर 7, फरीदाबाद तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इस में इस के बाद लिखित मामलें में कोई औद्योगिक विवाद है;

भीर चृंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुये हिस्याणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिस्थना सं० 5415—3—श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिस्थना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मासः में देने हेतु निर्दिश्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के वीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगतग्र्यथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री विजय पाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

संव क्रोविव/एफडी/4-87/4893:—चृंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैंव नानक डेरी प्लाट होडल फरीदाबाद, के श्रमिक श्री हरीण, मार्फत अन्तराष्ट्रीयवादी भजदूर यूनियन, जी-162, इन्दरा नगर, सैक्टर 7, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई भोद्योगिक, विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद ग्रिशिनियम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रीधमूचना सं 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रीधमूचना सं 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रीधिनयम की धारा 7 के श्रीधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नी ने लिखा मामला न्यायिनर्णय एवं पंचाद तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रीयवा सम्बन्धित मामला है :--

वया श्री हरीश, पुत्र श्री ऋषि दश्च शर्मा की सेवाश्रों का समापन न्यायो चित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं शो वि वि (एफडी | 86-86 | 4912 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं व परफैक्ट वैक लिंव, प्लाट नंव 27, एनव्झाई व्हीव, फरीदाबाद के श्रमिक श्री साधूशरण, मार्फत कार्यालय अन्तराष्ट्रीयवादी मजदूर यूनियन, इन्दरा नगर, सैक्टर 7, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इस के बांद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, ग्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रीधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिचसूना सं० 5415—3—श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं० 11495—जी—श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरोदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के वीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री प्राप्ता को प्रेक्श्मों का समायन न्यायोचित तथा श्रीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?